सूरह — एक कहानी

सूरह यूनुस

यूनुस

पूरा सफ़र — वो क़ौम जो वक़्त रहते ईमान लाई —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 10 • 109 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

हुवल्-लज़ी ज'अलश्-शम्स ज़िया-अंव्-वल्-क़मर नूरंव्-व क़द्दरहू मनाज़िल
5. वही है जिसने सूरज को चमकता उजाला और चाँद को नूर बनाया और उसकी मंज़िलें मुक़र्रर कीं।

व आख़िरु द'अ्वाहुम अनिल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन
10. और उनकी आख़िरी पुकार होगी: सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, जहानों के रब।

क़ुल बि-फ़ज़्लिल्-लाहि व बि-रहमतिही फ़-बि-ज़ालिक फ़ल्-यफ़्रहू
58. कहो: अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर — उसी पर उन्हें ख़ुश होना चाहिए।

अला इन्न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन 'अलैहिम व ला हुम यह्ज़नून
62. ख़ूब सुनो, अल्लाह के दोस्तों पर न कोई ख़ौफ़ है न वो ग़मगीन होंगे।

आल्-आन व क़द 'असैत क़ब्लु व कुन्त मिनल्-मुफ़्सिदीन
91. अब? हालाँकि तू पहले ना-फ़रमानी कर चुका और फ़साद करने वालों में से था।

फ़ल्-यौम नुनज्जीक बि-बदनिक लि-तकून लिमन ख़ल्फ़क आयह
92. तो आज हम तेरे जिस्म को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी बने।

क्या ये हैरत की बात है?

बेटा, ये सूरह एक ऐसे ए'तिराज़ का जवाब दे कर खुलती है जो लोगों को वाक़ई अजीब लगता था:

'**अ काना लिन्-नासि 'अजबन अन औहैना इला रजुलिम्-मिन्हुम अन अन्ज़िरिन्-नास** — **क्या लोगों के लिए ये हैरत की बात हो गई कि हमने उन्ही में से एक आदमी की तरफ़ वही की कि लोगों को ख़बरदार कर** — **व बश्शिरिल्-लज़ीन आमनू अन्न लहुम क़दम सिद्क़िन 'इन्द रब्बिहिम** — और ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी दे कि उनके लिए उनके रब के पास **सचा मुक़ाम** है?'

बेटा, उन्हें ये हैरत-अंगेज़ लगा कि पैग़ाम किसी फ़रिश्ते या बादशाह के बजाए एक

आम आदमी के ज़रिए आए। और अल्लाह जवाब देते हैं: **इस में अजीब क्या है? इंसानों के लिए पैग़ाम और किस के ज़रिए आता?**

'**इन्न रब्बकुमुल्-लाहुल्-लज़ी ख़लक़स्-समावाति वल्-अर्ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन सुम्मस्-तवा 'अलल्-'अर्शि युदब्बिरुल्-अम्र** — बेशक, तुम्हारा रब अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छे दिनों में बनाया, फिर अर्श पर मुस्तवी हुआ, **मामले का इंतेज़ाम** करते हुए — **मा मिन शफ़ी'इन इल्ला मिम्-ब'अ्दि इज़्निह** — कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद।'

और फिर, बेटा, अपने ऊपर की दो रौशनियों के बारे में एक ख़ूबसूरत आयत:

'**हुवल्-लज़ी ज'अलश्-शम्स ज़िया-अंव्-वल्-क़मर नूरंव्-व क़द्दरहू मनाज़िल — वही है जिसने सूरज को चमकता उजाला (ज़िया) और चाँद को नूर बनाया, और उस की मंज़िलें मुक़र्रर कीं — लि-तअ्लमू 'अददस्-सिनीन वल्-हिसाब — ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब जान सको।**'

बेटा, उलमा ने यहाँ की बारीकी पर मुद्दत से ग़ौर किया है। सूरज को '**ज़िया**' कहा गया — एक ऐसी रौशनी जो ख़ुद जलती और बिखेरती है। चाँद को '**नूर**' कहा गया — एक नर्म रौशनी, और ये लफ़्ज़ उस रौशनी के लिए इस्तेमाल होता है जो **दी गई** हो, ख़ुद पैदा न की गई हो।

और ग़ौर कीजिए कि चाँद की मंज़िलें क्यों बनाई गईं: **ताकि लोग वक़्त गिन सकें।** बेटा, किसी भी सदी का एक अन-पढ़ चरवाहा, बिना किसी कैलेंडर और बिना किसी आले के, ऊपर देख कर तक़रीबन जान सकता है कि महीने का कौनसा दिन है। **ये आसमान में रखी हुई एक रहमत है।**

'**मा ख़लक़ल्-लाहु ज़ालिक इल्ला बिल्-हक़्क़** — अल्लाह ने इसे हक़ के साथ ही बनाया।'

उनकी आख़िरी पुकार

फिर सूरह जन्नत वालों का बयान करती है, बेटा, और हमें एक झलक देती है कि वो वहाँ क्या कहते हैं:

'द'अ्वाहुम फ़ीहा सुब्हानकल्-लाहुम्म — उस में उनकी पुकार होगी: तू पाक है, ऐ अल्लाह — व तहिय्यतुहुम फ़ीहा सलाम — और उस में उनका सलाम होगा: सलाम — व आख़िरु द'अ्वाहुम अनिल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन — और उनकी आख़िरी पुकार होगी: सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, जहानों के रब।'

बेटा, जन्नत में कही जाने वाली तीन चीज़ें देखिए: **तस्बीह, सलाम, और हम्द।** पाकी बयान करना, सलामती, और तारीफ़।

और 'आख़िरु द'अ्वाहुम' — उनकी **आख़िरी** पुकार 'अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन' है। बेटा, **ये पूरी तख़्लीक़ की कहानी का आख़िरी जुमला है। जो कुछ भी कभी हुआ — हर आज़माइश, हर नुक़सान, हर वो सवाल जिसका हम जवाब न दे सके — सब इन चार लफ़्ज़ों में हल हो जाता है।**

'व लौ यु'अज्जिलुल्-लाहु लिन्-नासिश्-शर्रस्-तिअ्जालहुम बिल्-ख़ैरि ल-क़ुज़िय इलैहिम अजलुहुम — और अगर अल्लाह लोगों के लिए बुराई को उसी तेज़ी से भेज देते जिस तेज़ी से वो भलाई माँगते हैं, तो उनकी मुद्दत कब की पूरी हो चुकी होती।'

बेटा, ये एक ऐसी रहमत है जिसके बारे में हम कभी सोचते ही नहीं। **ग़ुस्से के लम्हों में लोग अपने आप को, अपने बच्चों को, अपनी ही ज़िंदगी को बद्-दुआ दे बैठते हैं।** अगर उन अल्फ़ाज़ का जवाब उतनी ही तेज़ी से मिलता जितनी तेज़ी से हमारी अच्छी दुआओं का, तो हम सब कब के ख़त्म हो चुके होते। **वो नुक़सान-देह दरख़्वास्तों को टाल देते हैं।**

'व इज़ा मस्सल्-इंसानद्-ज़ुर्रु द'आना लि-जम्बिही औ क़ा'इदन औ क़ा-इमा — और जब इंसान को तकलीफ़ छूती है, वो हमें लेटे हुए, या बैठे हुए, या खड़े हुए पुकारता है — फ़-लम्मा कशफ़्ना 'अन्हु ज़ुर्रहू मर्र क-अल्-लम् यद्'उना इला ज़ुर्रिम्-मस्सह — मगर जब हम उसकी तकलीफ़ दूर कर देते हैं, वो यूँ चला जाता है गोया उसने उस तकलीफ़ के लिए हमें पुकारा ही न था जो उसे पहुँची थी।'

बेटा, 'मर्र' — वो **गुज़र जाता** है, चल देता है, गोया कुछ हुआ ही न हो। **जब तक दर्द था हर हालत में गिड़गिड़ाना; जब रुक गया तो पूरी भूल।**

बेटा, अपने आप से ईमानदारी से पूछिए उस आख़िरी मुश्किल के बारे में जिस से आप बचाए गए। **क्या आप अब भी उन के उतने ही क़रीब हैं जितने उस के बीच में थे?**

उस पानी की तरह जो उतारा गया

और फिर, बेटा, क़ुरआन का सब से ज़िंदा बयान आता है कि ये दुनिया अस्ल में है क्या:

'**इन्नमा मसलुल्-हयातिद्-दुन्या क-मा-इन अन्ज़ल्नाहु मिनस्-समा — दुनियावी ज़िंदगी की मिसाल बस उस बारिश जैसी है जो हमने आसमान से उतारी — फ़ख़्तलत बिही नबातुल्-अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्-नासु वल्-अन्'आम** — और उस से ज़मीन का सब्ज़ा मिल-जुल गया, जिस में से इंसान और मवेशी खाते हैं।'

'**हत्ता इज़ा अख़ज़तिल्-अर्ज़ु ज़ुख़्रुफ़हा वज़्-ज़य्यनत — यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपनी सजावट ले ली और ख़ूबसूरत हो गई — व ज़न्न अह्लुहा अन्नहुम क़ादिरून 'अलैहा — और उसके लोगों ने समझा कि अब वो उस पर क़ादिर हैं — अताहा अम्रुना लैलन औ नहारन फ़-ज'अल्नाहा हसीदन क-अल्-लम् तग़्न बिल्-अम्स — तो उस पर हमारा हुक्म रात या दिन में आ गया, और हमने उसे काटा हुआ खेत बना दिया, गोया वो कल वहाँ लहलहाया ही न था।**'

बेटा, तरतीब महसूस कीजिए। बारिश पड़ती है, हर चीज़ हरी हो जाती है, खेत अपनी सब से ख़ूबसूरत हालत में होते हैं, और किसान किनारे खड़े ख़ुद को क़ाबू में महसूस करते हैं — '**हमने इसे सँभाल लिया, ये हमारा है'।** और फिर, एक रात में, वो ठूँठ बन जाता है।

'**क-अल्-लम् तग़्न बिल्-अम्स**' — गोया वो **कल** लहलहाया ही न था। बेटा, एक सदी पहले नहीं। **कल।**

बेटा, यही ये दुनिया है। आपके इर्द-गिर्द जो भी चीज़ मुस्तक़िल लगती है — एक कारोबार, एक घराना, अपनी भरपूर जवानी में एक जिस्म, एक ओहदा — **वो इसी चक्कर के किसी न किसी मुक़ाम पर है।** और आयत आप से इसे छोड़ने को नहीं कह रही; **ये कह रही है कि इस धोके में मत आइए कि ये आपके क़ाबू में है।**

'**वल्लाहु यद्'ऊ इला दारिस्-सलाम — और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाते हैं — व यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम** — और जिसे चाहें सीधे रास्ते की हिदायत देते हैं।'

बेटा, तज़ाद ग़ौर कीजिए: **खेत काट दिया गया, और ठीक अगली साँस में वो आपको 'दार अस्-सलाम' — सलामती के घर — की तरफ़ बुलाते हैं, जहाँ कुछ भी काट कर नहीं ले जाया जाता।**

'**लिल्लज़ीन अह्सनुल्-हुस्ना व ज़ियादह — जो नेकी करते हैं उनके लिए बेहतरीन बदला है — और उस से ज़्यादा।**' बेटा, नबी ﷺ ने '**अज़्-ज़ियादह**' — उस **ज़्यादा** — की तशरीह अल्लाह के चेहरे के दीदार से की। **ये ख़ुद जन्नत से भी ऊपर का इज़ाफ़ा है।**

अल्लाह के दोस्त

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन की सब से महबूब आयतों में से एक — और सब से ज़्यादा ग़लत समझी जाने वाली:

'**अला इन्न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन 'अलैहिम व ला हुम यह्ज़नून — ख़ूब सुनो, अल्लाह के दोस्तों पर न कोई ख़ौफ़ है न वो ग़मगीन होंगे।**'

और अल्लाह आपको अंदाज़ा लगाने के लिए नहीं छोड़ते। ठीक अगली आयत उनकी ता'रीफ़ करती है:

'**अल्लज़ीन आमनू व कानू यत्तक़ून — वो जो ईमान लाए और अल्लाह से डरते रहे।**'

बेटा, बस यही पूरी ता'रीफ़ है। **ईमान, और तक़वा।** कोई मो'जिज़े दरकार नहीं, कोई लक़ब नहीं, कोई मज़ार नहीं, कोई ख़ानदानी सिलसिला नहीं। **कोई भी मोमिन जो अल्लाह का शु'ऊर रखता हो वो लफ़्ज़ 'औलिया' में शामिल है।**

'**लहुमुल्-बुश्रा फ़िल्-हयातिद्-दुन्या व फ़िल्-आख़िरह — उनके लिए इस दुनियावी ज़िंदगी में और आख़िरत में ख़ुशख़बरी है — ला तब्दील लि-कलिमातिल्-लाह** — अल्लाह के कलिमात में कोई तबदीली नहीं — **ज़ालिक हुवल्-फ़ौज़ुल्-'अज़ीम — यही अज़ीम कामयाबी है।**'

बेटा, और ग़ौर कीजिए उन से दो चीज़ें हटाई गईं: **ख़ौफ़** और **हुज़्न** — ख़ौफ़ और ग़म।

उलमा ने बारीकी बताई: '**ख़ौफ़**' **मुस्तक़बिल** की फ़िक्र है — क्या हो सकता है, क्या बिगड़ सकता है। '**हुज़्न**' **माज़ी** का ग़म है — क्या खो गया, क्या अब वापस नहीं हो सकता।

बेटा, ये दो चीज़ें तक़रीबन सारी इंसानी तकलीफ़ को ढाँप लेती हैं। **हम या तो कल से डर रहे होते हैं या गुज़रे कल पर ग़म कर रहे होते हैं।** और अल्लाह अपने दोस्तों के बारे में कहते हैं: दोनों नहीं।

बेटा, इसका मतलब ये नहीं कि उन के साथ कोई दर्दनाक बात होती ही नहीं। **इसका मतलब ये है कि दर्द उन का मालिक नहीं बनता**, क्योंकि जो शख़्स जानता है कि उसके मामलात कौन चला रहा है वो मुस्तक़बिल से दहशत-ज़दा नहीं होता, और जो जानता है कि सब कुछ मुक़द्दर था वो माज़ी पर ख़ुद को नोचता नहीं।

'व ला यह्ज़ुन्क क़ौलुहुम इन्नल्-'इज़्ज़त लिल्लाहि जमी'आ — और उनकी बात तुम्हें ग़मगीन न करे। बेशक, सारी इज़्ज़त और ताक़त अल्लाह ही की है।'

बेटा, ये सीख लीजिए जब लोगों के अल्फ़ाज़ आपको तकलीफ़ दें: 'इन्नल्-'इज़्ज़त लिल्लाहि जमी'आ' — सारी इज़्ज़त उसी की है। **कोई आपको वो इज़्ज़त नहीं दे सकता जो उसने न दी, और कोई वो इज़्ज़त छीन नहीं सकता जो उसने दे दी।**

और फिर, बेटा, वो आयत कि एक मोमिन को अस्ल में किस चीज़ पर ख़ुश होना चाहिए:

'क़ुल बि-फ़ज़्लिल्-लाहि व बि-रहमतिही फ़-बि-ज़ालिक फ़ल्-यफ़्रहू — कहो: अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर — उसी पर उन्हें ख़ुश होना चाहिए — हुव ख़ैरुम्-मिम्मा यज्म'ऊन — ये उस से बेहतर है जो वो जमा करते हैं।'

बेटा, सलफ़ ने 'फ़ज़्ल और रहमत' की तशरीह क़ुरआन और इस्लाम से की। तो: **ख़ुश उसी पर हों। ख़ुश हों कि आपको हिदायत दी गई।**

बेटा, सोचिए हम एक अच्छे दिन को कैसे नापते हैं। पैसा आया, ख़बर अच्छी थी, मंसूबे कामयाब हुए। और अल्लाह कहते हैं: **ख़ुश होने लायक़ चीज़ वो है जो आपके**

पास पहले से है, हर रोज़, बाक़ी जो भी हुआ हो — कि उन्होंने आपको हिदायत दी।

'**हुव ख़ैरुम्-मिम्मा यज्म'ऊन**' — उस सब से बेहतर जो वो जमा कर रहे हैं।

तुम्हारा कोई अमल बे-गवाह नहीं

फिर सूरह उन लोगों को मुख़ातिब करती है जिन्होंने अपने अहकाम घढ़ लिए — बिना किसी इख़्तियार के हलाल और हराम क़रार देते हुए — और पूछती है: '**क़ुल आल्-लाहु अज़िन लकुम अम 'अलल्-लाहि तफ़्तरून** — कहो: **क्या अल्लाह ने तुम्हें इजाज़त दी, या तुम अल्लाह पर झूठ घढ़ते हो?**'

और फिर, बेटा, एक आयत जो बयान करती है कि आप कितनी मुकम्मल तरह देखे जा रहे हैं:

'**व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन क़ुरआनिंव्-व ला तअ्मलून मिन 'अमलिन इल्ला कुन्ना 'अलैकुम शुहूदन इज़ तुफ़ीज़ून फ़ीह — और तुम किसी भी हाल में हो, और क़ुरआन का जो हिस्सा भी पढ़ते हो, और जो अमल भी करते हो — हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उस में मशग़ूल होते हो।**'

'**व मा यअ्ज़ुबु 'अर्-रब्बिक मिम्-मिस्क़ालि ज़र्रीतिन फ़िल्-अर्ज़िं व ला फ़िस्-समा-इ व ला अस्ग़र मिन ज़ालिक व ला अक्बर इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन** — और तेरे रब से ज़मीन या आसमान में ज़र्रा भर भी कुछ ग़ायब नहीं, न उस से छोटा न बड़ा, मगर वो एक वाज़ेह किताब में है।'

बेटा, 'इज़ तुफ़ीज़ून फ़ीह' — **ठीक उस लम्हे जब तुम उस में ख़ुद को उंडेल रहे होते हो, उस में डूबे होते हो, वो गवाह होते हैं।**

बेटा, इसे तंबीह जितना ही तसल्ली के तौर पर भी समझिए। **हर निजी मेहरबानी जो आपने कभी की और किसी ने न देखी — वो गवाह थे। हर रात जब आप अकेले रोए और किसी को ख़बर न हुई — वो गवाह थे। हर बार जब आपने अपनी ज़ुबान रोक ली हालाँकि बोलने का पूरा हक़ था — उन्होंने देखा।**

फिर सूरह उन्हें फिर चैलेंज करती है कि इस जैसी एक सूरह ले आएँ, और उस दिन

से ख़बरदार करती है जब ज़ालिम ज़मीन की हर चीज़ फ़िद्ये में दे देना चाहेगा। और उन का बयान करती है जो वाक़ई गुम-गश्ता हैं: '**व मिन्हुम मंय्यस्तमि'ऊन इलैक अ फ़-अन्त तुस्मि'उस्-सुम्म व लौ कानू ला यअ्क़िलून** — और उन में वो भी हैं जो तुम्हें **सुनते** हैं। मगर क्या तुम बहरों को सुना सकते हो, जब कि वो अक़्ल से काम न लें?'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **वो सुनते हैं और बहरे रहते हैं। मसला कभी आवाज़ का न था।**

अब? इसी लम्हे?

फिर सूरह मूसा (अलैहि0) और फ़िरऔन की कहानी सुनाती है, बेटा, और एक ऐसी तफ़्सील देती है जो कोई दूसरी सूरह नहीं देती।

मूसा और हारून भेजे गए, और जादूगर हार गए, और उनकी अपनी क़ौम में से सिर्फ़ कुछ नौजवान ईमान लाए, फ़िरऔन और उसके सरदारों के डर से।

और मूसा ने उन्हें एक दुआ सिखाई, बेटा — हर उस शख़्स के लिए जो दबाव में जी रहा हो: '**रब्बना ला तज्'अल्ना फ़ित्नतल्-लिल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन — हमारे रब, हमें ज़ालिम क़ौम के लिए आज़माइश मत बना — व नज्जिना बि-रहमतिक मिनल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन** — और अपनी रहमत से हमें काफ़िर क़ौम से बचा ले।'

और उन्हें हुक्म दिया गया कि अपने घरों को नमाज़ की जगह बना लें — '**वज्'अलू बुयूतकुम क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्-सलाह**' — बेटा, **जब मस्जिद महफ़ूज़ न हो, तो घर ही मस्जिद बन जाता है।**

और मूसा ने फ़िरऔन की हट-धर्मी के ख़िलाफ़ दुआ की — और अल्लाह ने कहा: '**क़द उजीबत द'अ्वतुकुमा फ़स्तक़ीमा — तुम दोनों की दुआ क़ुबूल कर ली गई, तो सीधे रास्ते पर क़ायम रहो।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि रिवायात में है कि उस क़ुबूलियत और उसके पूरा होने के दरमियान कई साल गुज़रे। **दुआ फ़ौरन क़ुबूल हुई; उसका पूरा होना दहाइयों में हुआ। तो कभी ये मत समझिए कि देर से आने वाला जवाब रद्द किया गया जवाब है।**

और फिर समंदर, और पीछा। और यहाँ, बेटा, वो हिस्सा आता है जो सिर्फ़ इसी सूरह में है:

'**हत्ता इज़ा अद्रकहुल्-ग़रक़ु क़ाल आमन्तु अन्नहू ला इलाह इल्लल्-लज़ी आमनत बिही बनू इस्राईल व अना मिनल्-मुस्लिमीन — यहाँ तक कि जब डूबने ने उसे आ लिया, उसने कहा: मैं ईमान लाया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए, और मैं मुसलमानों में से हूँ।**'

और जवाब, बेटा — अरबी के चार लफ़्ज़ जो एक दरवाज़ा हमेशा के लिए बंद कर देते हैं:

'**आल्-आन व क़द 'असैत क़ब्लु व कुन्त मिनल्-मुफ़्सिदीन — अब? हालाँकि तू पहले ना-फ़रमानी कर चुका और फ़साद करने वालों में से था।**'

बेटा, '**आल्-आन**' — **अब? इसी** लम्हे? एक उम्र ख़ुदाई का दावा करने के बाद, नन्हे बच्चों को क़त्ल करने के बाद, एक क़ौम को ग़ुलाम बनाने के बाद — **अब जब पानी गले तक आ गया?**

बेटा, ये इस सूरह की सब से अहम तंबीह है। **यक़ीनी मौत के लम्हे में बोला गया ईमान क़ुबूल नहीं होता, क्योंकि वो अब कोई इंतेख़ाब ही नहीं रहा।** वो उस चीज़ के सामने सुपुर्दगी है जो पहले से नज़र आ रही है। **ईमान की क़ीमत सिर्फ़ तब तक है जब तक शक मुमकिन हो और ना-फ़रमानी का रास्ता अभी खुला हो।**

तो बेटा, 'बाद में' तौबह करने का मंसूबा मत बनाइए। **'बाद में' का एक सख़्त किनारा है, और किसी को नहीं पता वो कहाँ है।**

'**फ़ल्-यौम नुनज्जीक बि-बदनिक लि-तकून लिमन ख़ल्फ़क आयह — तो आज हम तेरे जिस्म को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी बने।**'

बेटा, उस ख़ौफ़नाक तंज़ पर ग़ौर कीजिए: '**नुनज्जीक**' — **हम तुझे बचाएँगे।** बचा सिर्फ़ जिस्म गया, और वो एक **नुमाइश** के तौर पर बचाया गया।

'**व इन्न कसीरम्-मिनन्-नासि 'अन आयातिना ल-ग़ाफ़िलून** — और बेशक, लोगों में से बहुत से हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।'

वो क़ौम जो वक़्त रहते ईमान लाई

और अब, बेटा, वो आयत जो इस सूरह को उसका नाम देती है — और ये एक पूरी क़ौम के बारे में एक ही आयत है।

'फ़-लौला कानत क़र्यतुन आमनत फ़-नफ़'अहा ईमानुहा इल्ला क़ौम यूनुस — तो कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई जो ईमान ले आई हो और उसका ईमान उसे फ़ायदा दे गया हो — सिवाए यूनुस की क़ौम के? लम्मा आमनू कशफ़्ना 'अन्हुम 'अज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्-हयातिद्-दुन्या व मत्तअ्नाहुम इला हीन — जब वो ईमान लाए, हमने उन से दुनियावी ज़िंदगी का ज़िल्लत वाला अज़ाब हटा दिया और उन्हें एक मुद्दत तक फ़ायदा उठाने दिया।'

बेटा, देखिए क्या कहा जा रहा है। तबाह होने वाली क़ौमों के तमाम बयानात में, **एक इस्तिस्ना है — एक बस्ती जो अज़ाब उतरने से पहले लौट आई, और बचा ली गई।**

यूनुस (अलैहि0) अपनी क़ौम को तंग आ कर छोड़ गए थे। अज़ाब क़रीब था। और उन्होंने — पूरे शहर ने — अल्लाह की तरफ़ रुजू किया, और वो उठा लिया गया।

बेटा, और इस आयत की जगह ग़ौर कीजिए। ये ठीक फ़िरऔन के रद्द किए गए एलान के बाद आती है। **दो मंज़र एक दूसरे के बग़ल में: एक आदमी जिसने बहुत देर से कहा, और एक क़ौम जिसने वक़्त रहते कहा।**

यही वो इंतेख़ाब है जो ये सूरह आपके सामने रख रही है।

और बेटा, इस में हर कम्युनिटी के लिए बेहद बड़ा हौसला है। **एक मुआशरा बदल सकता है। ये लाज़मी नहीं कि एक क़ौम अपनी गिरावट जारी ही रखे।** यूनुस की क़ौम तबाही के किनारे पर थी और उन्होंने अपना रुख़ बदल लिया — सब ने मिल कर — और अल्लाह ने उसे क़ुबूल किया।

'व लौ शा-अ रब्बुक ल-आमन मन फ़िल्-अर्ज़ि कुल्लुहुम जमी'आ — और अगर तेरा रब चाहता तो ज़मीन पर जो कोई है सब के सब ईमान ले आते — अ फ़-अन्त तुक्रिहुन्-नास हत्ता यकूनू मुअ्मिनीन — तो क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे यहाँ तक कि वो मोमिन बन जाएँ?'

बेटा, इस नुक़्ते पर ये क़ुरआन की सब से वाज़ेह आयतों में से एक है। **अल्लाह एक लफ़्ज़ से हर इंसान को मोमिन बना सकते थे। उन्होंने ऐसा नहीं किया। तो किसी इंसान को हक़ नहीं कि दूसरे पर ईमान ज़बरदस्ती थोपे।** आप दावत दे सकते हैं, ख़ूबसूरती से दलील दे सकते हैं, एक नमूना बन सकते हैं, और दुआ कर सकते हैं — बस यहीं तक आपका इख़्तियार है।

वही की पैरवी करो, और सब्र करो

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, कुछ हिदायतों के साथ।

'**क़ुल या अय्युहन्-नासु इन कुन्तुम फ़ी शक्किम्-मिन दीनी** — कहो: ऐ लोगो, अगर तुम मेरे दीन के बारे में शक में हो — **फ़-ला अअ्बुदुल्-लज़ीन तअ्बुदून मिन दूनिल्-लाह** — तो मैं उन की इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा करते हो — **व लाकिन अअ्बुदुल्-लाहल्-लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम** — बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है।'

'**व अक़िम वज्हक लिद्-दीनि हनीफ़ंव्-व ला तकूनन्न मिनल्-मुश्रिकीन** — और अपना रुख़ दीन की तरफ़ यक-सू हो कर क़ायम रखो, और हरगिज़ मुश्रिकों में से मत होना।'

'**व इंय्यम्सस्कल्-लाहु बि-ज़ुर्रिन फ़-ला काशिफ़ लहू इल्ला हू — और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो उसे हटाने वाला उस के सिवा कोई नहीं — व इंय्युरिद्क बि-ख़ैरिन फ़-ला राद्द लि-फ़ज़्लिह — और अगर वो तुम्हारे लिए भलाई का इरादा करे तो उसके फ़ज़्ल को कोई लौटाने वाला नहीं।**'

बेटा, इसे याद कर लीजिए। ये वही सचाई है जो सूरह फ़ातिर की आयत में है: **सिर्फ़ एक ही हाथ खोलता और बंद करता है। तो किसी और से डरने की ज़रूरत नहीं, और किसी और के सामने हाथ फैलाने की भी नहीं।**

'**क़ुल या अय्युहन्-नासु क़द जा-अकुमुल्-हक़्क़ु मिर्-रब्बिकुम** — कहो: ऐ लोगो, **तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका — फ़-मनिह्-तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लि-नफ़्सिह** — तो जो हिदायत पाए वो अपने ही लिए पाता है — **व मन**

ज़ल्ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु 'अलैहा — और जो भटके वो अपने ही ख़िलाफ़ भटकता है — **व मा अना 'अलैकुम बि-वकील — और मैं तुम पर निगराँ नहीं हूँ।**'

और सूरह की आख़िरी आयत, बेटा:

'**वत्तबि' मा यूहा इलैक वस्बिर हत्ता यह्कुमल्-लाह — और उस की पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ वही की जाती है, और सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दें — व हुव ख़ैरुल्-हाकिमीन — और वही सब से बेहतर फ़ैसला करने वाले हैं।**'

बेटा, देखिए आख़िरी हिदायत कितनी सादा है। **दो चीज़ें, और बस।**

एक — 'वत्तबि' मा यूहा इलैक': **वही की पैरवी करो।** वो नहीं जो मक़्बूल है, वो नहीं जो आसान है, वो नहीं जिसे इस दहाई में सब ने माक़ूल मान लिया है। **वही की पैरवी करो।**

दो — 'वस्बिर हत्ता यह्कुमल्-लाह': **सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला करें।** यहाँ तक नहीं कि लोग आपको मान लें। यहाँ तक नहीं कि हालात बेहतर हो जाएँ। यहाँ तक नहीं कि आपको नतीजा दिख जाए। **यहाँ तक कि वो फ़ैसला करें।**

बेटा, एक मोमिन की पूरी ज़िंदगी एक आयत में: **जो उतारा गया उसे थामे रखो, और बेहतरीन फ़ैसला करने वाले के फ़ैसले का इंतेज़ार करो।**

और यूँ ये सूरह, जो ये पूछ कर शुरू हुई थी कि क्या ये हैरत की बात है कि पैग़ाम एक आदमी के ज़रिए आया, उस आदमी के पैरोकारों को ठीक ठीक ये बता कर ख़त्म होती है कि उस पैग़ाम का क्या करना है: **उसकी पैरवी करो, और सब्र करो।**

और दरमियान में, इसने आपको दिखाया वो खेत जो रात भर में काट दिया गया, अल्लाह के वो दोस्त जिन्हें न ख़ौफ़ है न ग़म, वो फ़िद्या जो क़ुबूल न होगा, वो लफ़्ज़ '**अब?**' जो एक डूबते ज़ालिम से कहा गया — और एक शहर जो वक़्त रहते लौट आया।

इस सूरह से क्या सीखा

1. जन्नत में कहे जाने वाले आख़िरी अल्फ़ाज़ 'अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-

'आलमीन' हैं — हर चीज़ तारीफ़ में हल हो जाती है।

2. वो उन नुक़सान-देह चीज़ों को टाल देते हैं जो हम ग़ुस्से में माँगते हैं; अगर उन का जवाब हमारी अच्छी दुआओं जितनी तेज़ी से आता, हम ख़त्म हो चुके होते।

3. ये दुनिया अपनी सब से हरी हालत में एक खेत है जो रात भर में काट दिया जाता है — 'गोया वो कल लहलहाया ही न था'।

4. अल्लाह के 'औलिया' बस वो हैं जो ईमान लाए और तक़वा रखें — और उन से जो हटाया गया वो है मुस्तक़बिल का ख़ौफ़ और माज़ी का ग़म।

5. उसके फ़ज़्ल और रहमत पर ख़ुश हो — जो हिदायत तुम्हारे पास पहले से है वो उस सब से बेहतर है जो जमा किया जा रहा है।

6. 'अब?' — जब पानी गले तक आ जाए तब बोला गया ईमान कोई इंतेख़ाब नहीं; अपनी तौबह का शेड्यूल मत बनाओ।

7. एक शहर वक़्त रहते लौट आया और बच गया — एक क़ौम अपना रुख़ बदल सकती है; और किसी को ईमान पर मजबूर नहीं किया जा सकता।

या अल्लाह, हमें अपने उन दोस्तों में बना दीजिए जिन्हें न ख़ौफ़ है न ग़म, और हमें अपनी वही की पैरवी और आपके फ़ैसले तक सब्र की तौफ़ीक़ दीजिए। आमीन।